This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **2665**

Unique Paper Code : **12051302** **HC**

Name of the Paper : **Adhunik Kavita (Adhunik Kal Chhayawaad Tak)**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi—CBCS**

Semester : **III**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : 8+7

(क) उठ-उठ री लघु-लघु लोल लहर!
करुणा की नव अंगराई-सी,
मलयानिल की परछाईं-सी,
इस सूखे तट पर छिटक छहर
शीतल कोमल चिर कम्पन-सी,
दुर्ललित हठीले बचपन-सी,
तू लौट कहाँ जाती है री-
यह खेल खेल ले ठहर-ठहर!

अथवा

दिए हैं मैंने जगत को फूल-फल
किया है अपनी प्रभा से चकित-चल;
पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल-
ठाठ जीवन का वही
जो ढह गया है।

(ख) पीसा जाता जब इक्षु-दंड, झरती रस की धारा अखंड,
मेहँदी जब सहती है प्रहार, बनती ललनाओं का शृंगार,
जब फूल पिरोये जाते हैं,
हम उनको गले लगाते हैं।
वसुधा का नेता कौन हुआ ? भूखंड विजेता कौन हुआ ?
अतुलित यश-क्रेता कौन हुआ ? नव-धर्म-प्रणेता कौन हुआ ?
जिसने ना कभी आराम किया,
विघ्नों में रह कर नाम किया।

अथवा

कैसे करूँ कीर्तन, मेरे स्वर में है माधुर्य नहीं।
मन का भाव प्रकट करने को वाणी में चातुर्य नहीं॥
नहीं दान है, नहीं दक्षिणा खाली हाथ चली आई॥
पूजा की विधि नहीं जानती फिर भी नाथ चली आई॥

2. मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताओं का विश्लेषण कीजिये। 12

अथवा

'स्त्री-अधिकार एवं त्याग का द्वंद्व यशोधरा की मूल समस्या है'—इस कथन का पाठ के आधार पर विवेचन कीजिये।

3. जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। 12

अथवा

'लहर' के आधार पर प्रसाद की प्रेमानुभूति पर विचार कीजिए।

4. निराला की काव्यगत विशेषताओं का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिये। 12

अथवा

'तोड़ती पत्थर' कविता निराला की काव्य-संवेदना को कई अर्थों में छायावाद के घेरे से बाहर लाती है। इस कथन पर विचार कीजिये।

5. 'रश्मिरथी' काव्य के आधार पर 'कर्ण' का चरित्र-चित्रण कीजिये। 12

अथवा

'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता की मूल संवेदना लिखिए।

6. दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं **दो** पद्यांशों का रचना-कौशल लिखिए : 6+6

(क) ले चल वहाँ भुलावा देकर,
मेरे नाविक! धीरे-धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी,
अंबर के कानों में गहरी-
निश्छल प्रेम-कथा कहती हो,
तज कोलाहल की अवनी रे।

(भाव सौंदर्य)

(ख) हँसता है तो केवल तारा एक
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले बालों से,
हृदय-राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।
अलसता की-सी लता
किन्तु कोमलता की वह कली,
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह,
छाँह-सी अम्बर-पथ से चली।

(प्रकृति-सौंदर्य)

(ग) प्रियतम! तुम श्रुति पथ से आये।
तुम्हें हृदय में रख कर मैंने अधर कपाट लगाए
मेरे हास-विलास! किन्तु क्या भाग्य तुम्हें रख पाए
दृष्टि मार्ग से निकल गए ये तुम रसमय मनभाये

(वियोगानुभूति)